Ideas of J. S. Mill

Q. Indicate the Economic Ideas of J.S. Mill

Ans:- If Adam Smith may be called the father of the Political Economy. Chief heir in the direct line J. S. Mill was his. Haney.

J.S. Mill प्रसिद्ध विचारक जम्स मिल का पुत्र था। J.S. Mill का जन्म 20 मई 1806 ई0 को लन्दन में हुआ था। J.S. Mill के सम्बन्ध में " होनहार विरवान के होत चिकने पात" या योग्य पिता का योग्य पुत्र' वाली कहावत चरितार्थ होती है। वे केवल अर्थशास्त्री ही नहीं बल्कि एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। Mill की बाल्यावस्था की जीवन पढ़कर आश्चर्यचकित होना पड़ता है। 3 वर्ष में ग्रीक 8 वर्ष में लैटिस तथा 12-13 वर्ष की आयु में ये इतिहास, अर्थशास्त्र और साहित्य के पण्डित हो गये। उनके पिता ही उनके गुरु और प प्रदर्शक थे। 24 वर्ष (1830) की वायु में Mrs. Taylor नामक विधवा से विवाह किया था जो एक अत्यन्त बुद्धिमति एवं समाजवादी विचारों की महिला थी। J.S. Mill लन्दन में पैदा हुआ और 1873 में उनकी मृत्यु फ्रांस में हुई। इस महान विचारक है। उनकी पत्नी के समीप दक्षिण फ्रांस के एविगनन नामक स्थान में दफना दिया गया। इस प्रकार Gladstone इसे Saint of Rationalism की संज्ञा भी दी है।

J.S. Mill केवल प्रतिभाशाली थे बल्कि असे उच्च शिक्षा एवं महान विद्वानों का सम्पर्क भी प्राप्त हुआ था। स्वयं मिल ने भी स्थान-स्थान पर James mill, Mrs Toylar, Ricardo Benthan, comte, J. B. Say, Dumant, Coleridge आदि का पड़ने वाला प्रभावों का वर्णन किया है।

मिल का ग्रन्थ अर्थशास्त्र का सिद्धांत → J.S. Mill की प्रमुख पुस्तक History of British India थी। इन्होंने Political economy पर पुस्तक लिखी। उनकी आर्थिक विचारों उनके समकालीन आर्थिक विचारकों पर काफी पड़ा। J.S. Mill की प्रसिद्ध पुस्तक 1848 ई0 मैं प्रकाशित हुई जिसका पूरा नाम Principle of political Economy with some of their application to social philosophy था।

Political Economy को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा है कि:"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है धन की प्रगति और उत्पादन तथा वितरण के नियमों का अध्ययन करता है और

उन सब प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर्म पर विचार करता है जिसमें मानव जाति की इस सार्वभौमिक रूप से इच्छित वस्तु धन के द्वारा संपन्निता या विपन्नता में वृद्धि होती है?

J.s.mill ने अपनी पुस्तक को पांच भागों में विभाजित किया है। जिसमे production, distribution, Exchange, Influence of the progress of Societies on production and distribution dell and Influence of Government at किया जाता है। उन्होने उपभोग का विश्लेषण नहीं किया और J.B. Say भिन्न अपनी पुस्तक में उन्होंने उपभोग का अलग से विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यद्यपि आर्थिक सिद्धांतों के क्षेत्र में उनका योगदान नगण्य है।

इसीलिए जीड़ एवं रीस्ट ने लिखा है कि "With him classical economics mai be said in some way to have attained its perfection and with him begins it decay". मिल के साथ ही प्रतिष्ठित विचार धारा अपनी पूर्णता को पहुँची और उनके साथ ही उसका पतन भी प्रारम्भ हुआ। "

लेकिन फिर भी अपनी विचारधाराओं है। जिस समुचित ढंग से प्रस्तुत किया है और इसे समझाने के लिए उदाहरण का सहारा लिया है उसके चलते उनकी पुस्तक 19 वी शताब्दी के मध्य तक एक प्रसिद्ध पुस्तक के रूप में लोकप्रिय रही।

MAIN ECONOMIC HEAS of JOHAN STUART MILL→

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मिल परम्परावाद के पक्ष में, इसके विरोध में तथा समाजवादी विचारधारा के रूप में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रस्तुत करता है जिनकी व्याख्या क्रमशः निम्नलिखित रूप में कर सकते है :->

1. **आत्महित का सिद्धांत :** सर्वप्रथम Adam Smith ने आत्महित के साथ-साथ सामाजिक हित भी जोड़ा है। प्रत्येक व्यक्ति स्वहित की इच्छा रखकर ही करता है और यह इच्छा उसके अंतरात्मा से मिलता है। Adam Smith के इस सिद्धांत का सहजवाद एवं आशा वाद कहा है। mill और वैथम ने इसे Hedonism तथा utilitarianism के रूप में प्रस्तुत किया है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति तथा समाज के बीच धनात्मक सम्वन्ध होता है। उन्होंने आगे लिखा है कि इसा मसीहा के सिद्धांतों में उपयोगितावाद के नीतिशास्त्र की सही भावना पायी जाती है। दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि तुम चाहते । अपने पड़ोसियों के समान ही प्रेम करों। यही उपयोगितावादी नैतिकता का पूर्णता है। मनुष्य अपने सुख पूर्ण त्याग करके ही दूसरे को सुखी बनायें । यरी आत्महित की सर्वश्रेष्ठ विधि है।

2. **स्वतंत्र अर्थव्यवस्था का सिद्धांत**: → यह व्यक्तिवाद का आवश्यक निष्कर्ष है। चूँकि आत्महित में ही समाज का कल्याण है। अत: केवल व्यक्ति को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपने हित सम्पादन के लिए कोशिश करें। आर्थिक जगत में इसे free Economy कहा जाता है। इस विचार को मिल का मुक्तिवाद भी कहा है। के समान मिल भी स्वतंत्रता के पक्षपाती

Smith के समान मिल भी स्वतंत्रता के पक्षपाती ये स्पर्धा के विषय में मिल ने लिखा है कि "Every restriction. on Competition is an evil, every extension of its always aur ultimate goodan

3. जनसंख्या का सिद्धांत: Mill ने माल्यंस के जनसंख्या सिद्धांत को सिर्फ स्वीकार ही नहीं किया अपितु उसने उसको क्रियात्मक रूप प्रदान कसे का प्रयास भी किया। लेकिन माल्थसियन सिद्धांत के आलोचकों का कहना था कि जो उपभोग करता है वह उत्पादक भी करता है। उसकी आलोचना करते हुए अर्थशास्त्रियों ने लिखा है कि: → 'जो पैदा होता है वह केवल मुँह लेकर ही नहीं बस अपने साथ दो हाथ लेकर भी आता है। अत: पैदा होने वाला बच्चा समाज से भागता ही नहीं है वरन समाज को कुछ देता भी है।" J. S. Mill ने आलोचकों को उत्तर देते हुए कहा है कि→ "यह कहना व्यर्थ है कि संसार में आने वाला मुँह के साथ-साथ दो हाथ भी लाता है। क्या

मुँह उत्तना-ही आहार चाहता है, जितना कि पुराना मुँह। परंतु नये हाथ उत्तना पैदा नहीं कर सकते जितना कि पुराने हाथ पैदा करते है।"

मिल का यहां तक कहना कि - "निर्धनों व बेकारो को शादी नहीं करना चाहिए और शादी करते है तो उन पर कानून द्वारा रोक लगानी चाहिए । जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए mill ने स्त्रियों को स्वतंत्रता तथा समानता का अधिकार प्राप्त करने पर रोक लगाया।

4. **लाभ का विश्लेषण**: → Mill ने लाभ का कोई संतोषजनक सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया है। वस्तुतः उस युग मे लाभ और ब्याज दोनों में कोई सूक्ष्म अन्तर नहीं किया जाता था, कुल लाभ के बारे में मिल ने लिखा है कि यह त्याग जोखिम और मेहनत के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। और इसके बीमा और निरीक्षण की मजदूरी से बने हैं। दूसरे तरफ उन्होंने लिखा है कि : →The ratio of profit depended upon wages rising as wage fall and falling as wages rise.

5. **मूल्य का निर्धारण सिद्धांत**: परम्परावादियों के अनुसार mill ने यह स्वीकार किया है कि मजदूरी का निर्धारण मांग एवं पूर्ति (lron law of wages) पर आधारित होता है! उन्होंने मजदूरी के सुम्वन्ध में दो सिद्धांत दिये है:→ (1) wage fund theory और 2 Law of subsistence.

मजदूरी जनसंख्या अर्थात् काम करने वाले मजदूरों की संख्या और पूंजी अथवा श्रम को क्रय करने वाली निधि के अनुपात द्वारा निर्धारित होती है। इनके अनुसार मजदूरी दर = मजदूरी कोष / जनसंख्या इसे हम एक उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट कर सकते है।

मान लिया जाय कि मजदूरी कोष =1000 है और मजदूरों की संख्या 100 तो औसत मजदूरी = 1000/100 =10 होगी। लेकिन इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए थॉर्टन ने कहा है कि : "Is there really any such fund? is there any specific person of any single individuals capital which the owner must necessary expand upon labour" जहाँ तक प्रश्न मजदूरी कोष में वृद्धि करने का है यह कार्य श्रमिकों की शक्ति है बाहर है, परंतु श्रमिक अपनी संख्या में होने वाली वृद्धि को नियंत्रित करके मजदूरी में वृद्धि कर सकते है। कॉबडन ने इस सम्बन्ध में कहा है कि "मजदूरी बढ़ती है, जबकि दो मालिक एक व्यक्ति है पीच्छे दौड़ते है और, गिरती है जबकि दो व्यक्ति एक ही मालिक के पीच्छे पीछे दौड़ते हैं।" उन्होंने श्रमिको की संख्या कम होने से मजदूरी बढ़कर इसी जीवन निर्वाह सीमा पर आ जाने की प्रक्रिया बढ़ती रहती है।

(6). लगान का सिद्धांत : → लगान का सिद्धांत परम्परावादी अर्थशास्त्री Ricardo की देन है। mill Ricardo के लगान सिद्धांत को न केवल अपनाया अपितु उसके क्षेत्र का विस्तार भी किया तथा व्यक्तिगत योग्यता जैसे महत्वपूर्ण तत्व । सम्मिलित करके सिद्धांत को ब्याप्त बना दिया। सिर्फ भूमि को ही उपजाऊ शक्ति के कारण लगान नहीं मिलता है। सभी व्यक्तियों की योग्यता समान नहीं होती। बल्कि व्यक्तिगत योग्यता के कारण भी लगान मिलता है। इस प्रकार अधिक योग्य व्यक्ति तथा सी० योग्य व्यक्ति का अन्तर भी अच्छे व्यक्ति के लिए लगान कहलाएगा।

7) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत:→ Smith, Ricardo और डुनोअर की तरह गिल का भी मानना था कि लागत में तुलनात्मक अन्तर ही अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार है, लेकिन Ricardo ने दो देशों के बीच बस्तुओं के व्यापार का वास्तविक अनुपात के निर्धारण की प्रक्रिया का उल्लेख करने में सफलता नहीं पायी। इस समस्या का समाधान mill ने अपने द्वारा प्रतिपादित Theory of Ricardo Ricaprocal demand के आधार पर किया है। दूसरे शब्दों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य उद्देश्य वस्तु के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में समानता लागी है। इस तरह मिल ने Low of demand Supply को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में लागू कर व्यापार में सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। इससे लगता है कि वे आयात और निर्यात करने के पक्ष में थे ताकि भुगतान संतुलन स्थापित हो सके। लेकिन इन्हें हम संरक्षण के हिमायती नहीं कह सकते।

(8) श्रम विभाजन :→ Adam Smith की तरह mill भी श्रम विभाजन के गुण एवं दोषों का उल्लेख किया है। Mill ने बताया है कि श्रम विभाजन प्रक्रिया में प्रत्येक श्रमिक को उसकी योग्यता के अनुसार काम दिया जाता है। जब प्रत्येक उपक्रिया मैं निपुणता एवं शक्ति को आवश्यकतानुसार मात्रा प्रयुक्त की जाती है तो उत्पादन सर्वाधिक कुशल होगा।

(9) स्थिर अवस्था →इस अवस्था की भयावह कल्पना mill ने भी की, जिस कारण इनको भी कभी-कभी निराशावादी विचारक कह दिया जाता है। mill के अनुसार-उत्पादन प्रणाली में सुधार जनसंख्या विस्तार पूंजी का संग्रह, उत्पत्ति हास नियम के प्रभाव से लाभ की दर घटती जाती है, लगान बढ़ता है। कुछ समय तक स्थिर अवस्था को पूंजी के निर्यात तथा उत्पादन प्रणाली के सुधार से टाला जा सकता है, परंतु, अंत में स्थिर अवस्था आकर ही रहेगी। इसलिए मिल ने जनसंख्या नियंत्रण का सुझाव दिया है।

10. सरकारी हस्तक्षेप→ Mill के अनुसार सरकार को सीमित क्षेत्र में लोगों के सामान्य अधिकार है। नियंत्रित करना चाहिए उस पर मात्र उतना ही नियंत्रण होना चाहिए जिससे कि दूसरे की स्वतंत्रता व अधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। उन्होंने स्पष्ट किया है कि सरकार अनावश्यक रूप से श्रम विभाजन को नियंत्रण कर उत्पादकता में कमी ला सकती है। mill का मानना था कि निजी कार्य समान्यतः-श्रेष्ठ और सस्ते होते है। यही कारण है कि सरकारी प्रतिष्ठानों से प्रतियोगिता में टीक नहीं पाती।

. ने इस प्रकार मिल ने प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का कई स्थलो पर विरोध भी किया है। हस्तक्षेप संक्षेप में उन्हें निम प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं।:-

(A) अर्थशास्त्र की परिभाषा एवं क्षेत्र:

(B) अर्थशास्त्र के नियम

© अर्थशास्त्र के प्रणाली

(d) संरक्षण की नीति

(e) आर्थिक गतिशीलता : →